भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

खण्ड –XXVI अंक–19 15 अक्टूबर, 2021

महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा। मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः।।

सात महर्षिजन, चार उनसे भी पूर्व में होने वाले सनकादि तथा स्वायम्भुव आदि चौदह मनु–ये मुझमें भाववाले सब–के–सब मेरे संकल्प से उत्पन्न हुए हैं जिनकी संसार में यह सम्पूर्ण प्रजा है।। **श्रीमद्भगवद्गीता 10/6**

गांधी जयंती समारोह

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली द्वारा दिनांक 2 अक्तूबर, 2021 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 152वीं जयंती के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी को भी उनकी 117वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पारंपरिक दीप प्रज्ज्वलन के साथ समारोह के कार्यक्रमों की शुरुआत हुई। कार्यक्रम में संस्थान निदेशक–प्रो. वी. रामगोपाल राव; प्रो. ए. के. गांगुली, उप निदेशक (नीति एवं योजना) सहित संस्थान के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। संस्थान समुदाय के लिए कार्यक्रम का सीधा (लाइव) प्रसारण किया गया।

निदेशक सम्बोधन (अनुवादित सार)

संस्थान निदेशक, प्रो. वी. रामगोपाल राव ने सभी को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 152 वीं जयंती एवं श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की 117 वीं जयंती के अवसर पर शुभकामनाएं दी। प्रो. राव ने कहा कि महात्मा गांधी जी के विचार कभी पुराने नहीं होते हैं, उनके विचारों की प्रासंगिकता वर्तमान समय में भी उतनी ही है।

जिन सिद्धांतों का उन्होंने पालन किया, उनकी प्रासंगिकता हमेशा रहेगी। हम अभी भी इससे बहुत कुछ सीख सकते हैं। यहां तक कि, यदि वर्तमान में नई शिक्षा नीति को देखें, तो पाते हैं कि वास्तव में गांधी जी उन दिनों जो कह रहे थे, आज हम सही मायने में वही चर्चा कर रहे हैं। गांधी जी नें अपनी नेतृत्व क्षमता से मुझे बहुत प्रभावित किया है, मैं उनका अनुसरण करने; उनको पढ़ने व समझने की कोशिश कर रहा हूं।

सभी को संबोधित करते हुए प्रो. राव ने कहा कि गांधी के अभ्यास के बारे में, जिसे प्रबंधन स्कूल 'वितरित नेतृत्व मॉडल' कहते हैं, वास्तव में उससे बहुत कुछ सीखने व उसका अनुपालन करने की आवश्यकता है। यहाँ तक कि बड़े–बड़े निगमों द्वारा भी 'वितरित नेतृत्व मॉडल' का अनुसरण करने की आवश्यकता है।

राष्ट्रपिता के प्रसिद्ध शब्दों को स्मरण करते हुए निदेशक महोदय ने कहा –''मैं नहीं चाहता कि मेरा घर चारों ओर से दीवारों से घिरा हो और मेरी खिड़कियाँ बंद हों। मैं चाहता हूं कि सभी देशों की संस्कृति मेरे घर में यथा संभव स्वच्छंद विचरण करे। लेकिन मैं यह नहीं चाहता हूँ कि कोई मुझे अपनी संस्कृति से दूर करे।'' इस प्रकार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के अनमोल विचारों को उद्घृत कर प्रो. रामगोपाल राव ने कहा कि हमें देखना होगा कि आधुनिक समय में किस प्रकार हम इन विचारों को अपने जीवन में आत्मसात कर सकते हैं। मुझे आशा है कि एक संस्थान के रूप में हम उनके आदर्शों का पालन करने के प्रयास करेंगे।

प्रो. राव ने कहा कि गांधी जी कहते थे कि–हमें किसी भी संस्कृति से सीखने की जरूरत है, तथा बिना मतभेदों के हमें सभी संस्कृतियों का स्वागत करने की जरूरत है। गांधी जी के बारे में पढ़ने पर एक प्रमुख बात का पता चलता है–वह है उनकी निस्वार्थ सोच, उन्हें कभी देश के प्रथम राष्ट्रपति, प्रथम प्रधानमंत्री या अन्य पद पाने की लालसा नहीं रही। निस्वार्थ भाव में रमे रहने से उन्हें निडरता प्राप्त हुई। चूंकि गांधी जी निडर थे इसलिए वो असीमित थे और निडर होकर कई सत्याग्रह कर सके। गांधी जी मानते थे कि अगर हम निस्वार्थ भाव से कोई भी कार्य नहीं करते है तो हम निडर नहीं हो सकते, और यदि हम निडर नहीं हैं तो असीमित नहीं हो सकते। जब हम उद्यमिता की बात करते हैं तो मुझे लगता है कि गांधी जी सबसे बड़े सामाजिक उद्यमी थे। बहुत कम सामाजिक उद्यमियों ने वो मुकाम हासिल किया जो गांधी जी कर सके ।

निदेशक महोदय ने कहा कि मैं एक इतिहासकार की एक किताब पढ़ रहा था, गांधी जी चार चीजें देख रहे थे–पहला, भारत को ब्रिटिश कब्जे से मुक्त कराना जिस पर उनका पूर्ण विश्वास था; दूसरा समाज से अस्पृश्यता हटाना, जिसके लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया; तीसरा हिंदुओं और मुसलमानों के बीच संबंधों में सुधार करना और अंततः आर्थिक स्थिति में भारत को एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाना। उन्होने गांधी जी की नेतृत्व की विशेषताओं का जिक्र करते हुये कहा कि अगर कोई लक्ष्य प्राप्त करना है तो एकता के साथ मिलकर कार्य करना होगा। मेरे अनुसार

गांधी जी की मूल क्षमताएं (Core Competencies) थीं–उपवास करना, उन्होने अपने जीवन में लगभग 14 बार उपवास किया इसे एक सामाजिक व राजनैतिक हथियार के रूप में प्रयोग किया। साम्प्रदायिक एकता के लिये व साम्प्रदायिक हिंसा के विरुद्ध भी कई दिन का उपवास रखा। अहिंसा, ब्रह्मचर्य तथा अपने आप को मजबूत करने के लिए भी उन्होने उपवास का सहारा लिया। ये सब उन्होने एकाएक नहीं किया, मस्तिष्क व शरीर को तंदुरुस्त रखने के लिए उन्होने कई वर्षों तक अभ्यास किया। गांधी जी की कहानी एक मजबूत संवहन वाले युवक की है, वो एक गरीब परिवार में पैदा हुए। दक्षिण अफ्रीका में घटी घटना नें उन्हें एक क्रांतिकारी के रूप में बदल दिया।

गांधी जी के विकास मॉडल व विचार अभी भी प्रासंगिक हैं। वर्तमान मुद्दे जैसे कि जलवायु परिवर्तन, ग्रामीण क्षेत्र से पलायन आदि कई ऐसे विषय हैं जिस पर बहुत कुछ करने की जरूरत है। वास्तव में आज एक बड़े बदलाव के लिए हमें गांधी जैसे लीडर की आवश्यकता है । मैं यही उम्मीद करता हूँ कि देश में कई गांधी या गांधी जी के अनुयायी होंगे

जय हिन्द!

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI /358178 दिनांक 29.09.2021 के अनुसार **प्रो. राजीब बासु मल्लिक** ने 21.09.2021 से संस्थान के सिविल इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–14ए में प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI /2021/356649 दिनांक 24.09.2021 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) नेहा तनेजा** ने 07.09.2021 से संस्थान के रसायन विज्ञान विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/ IESI /360072 दिनांक 06.10.2021 के अनुसार **प्रो. डिकेन्स लियोनार्ड एम.** ने 04.10.2021 से संस्थान के मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/ IESI /2021/360734 दिनांक 08.10.2021 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) संघाती भट्टाचार्य** ने 01.10.2021 से संस्थान के रासायनिक इंजीनियरी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/ IESI /2021/360745 दिनांक 08.10.2021 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) हेमलता छाबड़ा** ने 01.10.2021 से संस्थान के रासायनिक इंजीनियरी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/ IESI /2021/360753 दिनांक 08.10.2021 के अनुसार **डॉ. कान्ति नन्दन मिहूलिया** ने 01.10.2021 से संस्थान के रासायनिक इंजीनियरी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/ IESI /2021/360749 दिनांक 08.10.2021 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) सुरभि लवानिया** ने 01.10.2021 से संस्थान के रासायनिक इंजीनियरी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/ IESI /2021/360252 दिनांक 06.10.2021 के अनुसार **डॉ. मुहम्मद हनीफ ए.पी.** ने 06.10.2021 संस्थान के मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-II/2021/359157 दिनांक 04.10.2021 के अनुसार **श्री विकास पाण्डे** ने 01.10.2021 से संस्थान के खेलकूद एकक में वेतन लेवल–6 में सहायक खेलकूद अधिकारी के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

त्यागपत्र स्वीकृत

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति संख्या IITD/Estt-II/ 2021/358093 दिनांक 30.09.2021 के अनुसार **डॉ. अभिषेक गुप्ता,** चिकित्सा अधिकारी (भा.प्रौ.सं. अस्पताल) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 30.09.2021 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. अभिषेक गुप्ता को 30.09.2021 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति संख्या IITD/Estt-II/ 2021/326273 दिनांक 24.09.2021 के अनुसार **श्री मनीष कुमार**, वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक (विद्युत इंजीनियरी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 15.07.2021 से स्वीकार कर लिया है। अतः श्री मनीष कुमार को 15.07.2021 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

हिन्दी पखवाडा–2021 सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी संस्थान में 14–30 सितम्बर, 2021 के बीच हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ 14 सितम्बर, 2021 को **"राजभाषा नीति, अधिनियम, वार्षिक कार्यक्रम व संस्थान में इनका कार्यान्वयन"** विषय पर प्रशिक्षण कार्यशाला का ऑनलाइन आयोजन करके किया गया। 27 ऑनलाइन प्रतिभागियों सहित लगभग 37 प्रतिभागियों ने इस कार्यशाला में सहभागिता की। इस कार्यशाला की अध्यक्षता प्रो. एस.जी. देशमुख, उप निदेशक (प्रचालन) द्वारा की गई। इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में सुश्री सुनीति शर्मा, निदेशक (राजभाषा) (से.नि.), शिक्षा मंत्रालय को आमंत्रित किया गया था।

डॉ. नीरज चौरसिया (अध्यक्ष, हिन्दी कक्ष) ने सर्वप्रथम निदेशक, कुलसचिव

महोदया; मुख्य वक्ता श्रीमती सुनीति शर्मा तथा उपस्थित सभी ऑनलाइन प्रतिभागियों का स्वागत किया। हिन्दी दिवस की हार्दिक बधाई देते हुए अपने कार्यशाला की शुरूआत हिन्दी के प्रसिद्ध कवि गिरिजा कुमार माथुर की निम्न चार पंक्तियों से की:

"सागर से मिलती धाराएं,

हिन्दी सबकी संगम है।

शब्द नाद, लिपि से भी आगे

एक भरोसा अनुपम है..."

कार्यशाला की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए आपने कहा कि 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस तथा 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस मनाया जाता है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसरण में शिक्षा मंत्रालय द्वारा समय–समय पर राजभाषा हिन्दी के संबंध में कार्यशाला तथा विचार–विमर्श संगोष्ठी इत्यादि आयोजित करने के लिए निर्देश जारी किए जाते हैं। इसी क्रम में हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए तथा कोविड–19 के चलते दिशा–निर्देशों का पालन करते हुए ऑनलाइन माध्यम से कार्यशाला का आयोजन किया गया है। श्रीमती इन्द्रमणि एवं श्रीमती राजेश कुमारी ने जीवित गुलदस्ता देकर वरिष्ठ अधिकारियों तथा मुख्य अतिथि का स्वागत किया। इसके उपरान्त डॉ. चौरसिया ने प्रो. एस.जी. देशमुख उप निदेशक (प्रचालन) को सम्बोधन के लिए आमंत्रित किया।

प्रो. देशमुख ने सभी का स्वागत किया एवं दिवस दिवस की शुभकामनाएं दी। आपने बताया कि आई.आई.टी. दिल्ली ने अपनी पहचान भारत वर्ष में ही नहीं अपितु दुनिया में बनाई है तथा बहुत सी उपलब्धियां प्राप्त की हैं। अन्तरराष्ट्रीय स्तर के मापदण्ड पर भी आई.आई.टी. दिल्ली का विशेष स्थान है। इसी संदर्भ में हमें हिन्दी प्रचार–प्रसार का महत्व समझना चाहिए तथा सभी अधिकारियों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों को इसे ध्यान में रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिन्दी भाषा में सभी भाषाओं के शब्द शामिल है और अब तो ऑक्सफोर्ड में **'आत्मनिर्भर'** शब्द को स्थान दिया गया है यही हमारी पहचान है। हम चाहते हैं कि विश्व स्तर पर हिन्दी को उसका दर्जा प्राप्त हो। केवल 14 सितम्बर ही नहीं अपितु सभी दिन हिन्दी के हों। उप निदेशक महोदय ने एक बार फिर सभी को हिन्दी दिवस की बधाई देते हुए अपना सम्बोधन समाप्त किया। इसके उपरान्त डॉ. चौरसिया ने कुलसचिव महोदया को सम्बोधन के लिए आमंत्रित किया।

डॉ. दीपिका भास्कर, कुलसचिव ने हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में सभी को शुभकामनाएं दीं। आपने कहा कि हिन्दी सभी भाषाओं में अत्यधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिन्दी पखवाड़ा तथा हिन्दी दिवस समाज को जोड़ने का माध्यम है। विकसित तथा विकासशील देश जो उन्नति के शिखर पर है वे सभी अपनी भाषा को महत्व देते हैं, हमें भी राष्ट्रभाषा का यह सम्मान अपने अन्दर लाना है। हिन्दी कक्ष द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेकर इन्हें सफल बनाएं तथा राष्ट्रहित में कार्य करें। अन्त में 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा' इन दो पंक्तियों के साथ कुलसचिव महोदया ने अपने सम्बोधन को विराम दिया। डॉ. चौरसिया ने आमंत्रित वक्ता श्रीमती सुनीति शर्मा का संक्षिप्त परिचय देते हुए उन्हें सम्बोधन के लिए आमंत्रित किया तथा कहा कि उनके द्वारा प्रदान ज्ञान प्रतिभागियों के लिए अत्यन्त उपयोगी रहेगा।

श्रीमती सुनीति शर्मा ने हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कहा **'सुन्दर है मनोरम है मीठी है, सरल है. ..ओजस्विनी है और अनूठी है ये हिन्दी.....'**। आपने सरकार की राजभाषा नीति, संवैधानिक उपबन्ध, वार्षिक कार्यक्रम, तिमाही प्रगति रिपोर्ट, अनुच्छेद 343, 210, 120, 351 राजभाषा नियम 1963, राजभाषा संकल्प–1968, राजभाषा नियम 1976 आदि का विस्तार से वर्णन किया। प्रतिभागियों ने उत्साह के साथ कार्यशाला में भाग लिया तथा महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त की। कार्यशाला के अन्त में **श्री आनन्द प्रकाश,** सहायक कुलसचिव (हिन्दी कक्ष) ने सभी प्रतिभागियों, उप निदेशक (प्रचालन), संस्थान कुलसचिव तथा आमंत्रित वक्ता को धन्यवाद दिया। सफलतापूर्वक कार्यशाला समापन के लिए श्री आनन्द प्रकाश ने हिन्दी कक्ष के स्टाफ सदस्यों तथा उपस्थित अधिकारीगण को धन्यवाद एवं बधाई दी।

निबन्ध लेखन प्रतियोगिता:

इसके उपरान्त 16 सितम्बर, 2021 को संस्थान के ग्रुप 'बी' स्टाफ सदस्यों के लिए **'ऑनलाइन माध्यमों से शिक्षा का स्वास्थ्य एवं समाज पर प्रभाव'** तथा ग्रुप 'सी' स्टाफ सदस्यों के लिए **'कौशल विकास एवं राष्ट्र समृद्धि'** विषय पर हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें 23 स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। ग्रुप 'बी' स्टाफ सदस्यों के लिए आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार **श्री सोमवीर** (कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक, भौतिकी विभाग) ने; द्वितीय पुरस्कार (संयुक्त रूप से) **श्री प्रवीण दशरथ पौनिकर** (कनिष्ठ लेखा अधिकारी, लेखा परीक्षा अनुभाग) एवं **श्री रजनीश अग्रवाल** (कनिष्ठ लेखा अधिकारी, लेखा परीक्षा अनुभाग) ने; तृतीय पुरस्कार (संयुक्त रूप से) **सुश्री गुंजन मिश्रा** (वरिष्ठ पुस्तकालय सूचना सहायक, केन्द्रीय पुस्तकालय) **एवं श्री नरेन्द्र कुमार** (कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक, रासायनिक इंजीनियरी विभाग) ने प्राप्त किया। ग्रुप 'सी' स्टाफ सदस्यों के लिए आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार (संयुक्त रूप से) **श्री मनोज** (कनिष्ठ सहायक, स्नातकोत्तर अनुभाग) एवं **सुश्री शुभ्रा गुप्ता** (वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक, रसायन विज्ञान विभाग) ने; द्वितीय पुरस्कार (संयुक्त रूप से) **श्री प्रकाश शर्मा** (रासायनिक इंजीनियरी विभाग) एवं **श्री हरिओम कुमार** (वरिष्ठ सहायक, भण्डार क्रय अनुभाग) ने; तृतीय पुरस्कार (संयुक्त रूप से) **श्रीमती हेमा कुमारी** (वरिष्ठ सहायक, स्थापना अनुभाग–II) एवं **श्री हिमांशु कुमार** (कनिष्ठ सहायक, स्नातकोत्तर अनुभाग) ने प्राप्त किया।

हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूपण (नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग) प्रतियोगिता:

17 सितम्बर, 2021 को ग्रुप 'बी' एवं 'सी'

स्टाफ सदस्यों के लिए **हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूपण (नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग) प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में 16 स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया इसमें प्रथम पुरस्कार **श्री प्रवीण दशरथ पौनिकर** (कनिष्ठ लेखा अधिकारी, लेखा परीक्षा अनुभाग); द्वितीय पुरस्कार **श्रीमती हेमा कुमारी** (वरिष्ठ सहायक, स्थापना अनुभाग–II); तृतीय पुरस्कार (संयुक्त रूप से) **श्री हरिओम कुमार** (वरिष्ठ सहायक, भण्डार क्रय अनुभाग) एवं **श्री मनोज** (कनिष्ठ सहायक, स्नातकोत्तर अनुभाग) ने प्राप्त किया।

राजभाषा प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिताः

20 सितंबर, 2021 को ग्रुप 'बी' एवं 'सी' स्टाफ सदस्यों के लिए **राजभाषा प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। इसमें 20 स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार **श्री राज किशोर कुमार** (कनिष्ठ सहायक, सिविल इंजीनियरी विभाग) को; द्वितीय पुरस्कार **श्री हरिओम कुमार** (वरिष्ठ सहायक, भण्डार क्रय अनुभाग) को; तृतीय पुरस्कार (संयुक्त रूप से) **श्री दिनेश कुमार** (वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक, अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग) एवं **श्री आलोक यादव** (तकनीकी अधीक्षक, रसायन विज्ञान विभाग) को प्रदान किया गया।

हिन्दी समारोह का आयोजनः

30 सितंबर, 2021 को संस्थान के बोर्ड रूम में हिंदी समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ऑनलाइन माध्यम से लगभग 60 स्टाफ सदस्यों एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने भागीदारी की।

समारोह की अध्यक्षता संस्थान निदेशक **प्रो. वी. रामगोपाल राव** ने की। कार्यक्रम की शुरुआत **सुश्री रत्ना दास** (पुस्तकालय एवं सूचना सहायक) द्वारा सरस्वती वंदना से की गई। **डॉ. नीरज चौरसिया** अध्यक्ष, हिंदी कक्ष ने उपस्थित गणमान्य अधिकारियों तथा अन्य संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से जुड़े प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती इन्द्रमणि ने किया। डॉ. नीरज चौरसिया ने संस्थान निदेशक, उपनिदेशक (नीति एवं योजना), कुलसचिव महोदया को जीवित गुलदस्ता भेट करके स्वागत किया तथा पिछले 1 वर्ष के दौरान हिंदी कक्ष द्वारा किए गए कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसके उपरांत डॉ. चौरसिया ने माननीय गृहमंत्री एवं शिक्षा मंत्री के संदेशों का पाठन किया। संस्थान कुलसचिव **डॉ. दीपिका भास्कर** जी ने सभी को 'राजभाषा प्रतिज्ञा' दिलाई। कोरोना महामारी के कारण कार्यक्रम में पुरस्कार पाने वाले प्रतिभागियों को आमंत्रित नहीं किया गया। सभी ने ऑनलाइन माध्यम से हिंदी समारोह में भागीदारी की। इस अवसर पर गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा प्राप्त हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणामों की घोषणा की गई।

अध्यक्ष, हिन्दी कक्ष ने पी.पी.टी. के माध्यम से 'जिज्ञासा' (हिन्दी विज्ञान जर्नल) अंक 1 से 34 तक के सभी अंकों का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी हिंदी कक्ष द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका **'जिज्ञासा'** के **35वें अंक** का विमोचन निदेशक महोदय, उप निदेशक तथा संपादन मंडल के सदस्यों द्वारा किया गया। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए डॉ. चौरसिया ने **प्रो. अशोक कुमार गांगुली,** उपनिदेशक (नीति एवं योजना) को संबोधन के लिए आमंत्रित किया। प्रो. गांगुली ने अपने संबोधन में कहा कि –जिन छात्रों की मातृभाषा हिन्दी नहीं है उन्हें कविता, लेख आदि के माध्यम से प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि वे हिन्दी से जुड़ सकें। हिन्दी 'जिज्ञासा' विशेषांक (2013–14) की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि यह अत्यन्त प्रभावी है तथा विभिन्न संस्थानों को आपस में जोड़ता है। हिन्दी कक्ष बहुत अच्छा कार्य कर रहा है। इसके उपरांत अध्यक्ष, हिंदी कक्ष ने अध्यक्षीय संबोधन के लिए संस्थान निदेशक **प्रो. वी. रामगोपाल राव** को आमंत्रित किया। आपने बताया कि संस्थान में हिन्दी के विकास की सम्भावनाओं का पता लगाकर उन्हे बढ़ाने का कार्य किया जाता है। संस्थान में जितना सम्भव हो हिन्दी का प्रसार होना चाहिए। जो छात्र जिस भाषा में सहज हो उसे उस भाषा में बढ़ने का मौका देना चाहिए। संस्थान में आने वाले गैर हिंदी भाषी तथा विदेशी विद्यार्थियों को हिंदी सिखाने के लिए कार्य किया जाए तो यह संस्थान के हित में होगा। संस्थान में अन्तरराष्ट्रीय छात्रों को हिन्दी सिखाना तथा हिन्दी माध्यम के छात्रों के लिए स्पोर्ट सिस्टम बनाया जाए ताकि वे आसानी से दूसरी भाषा में जा सकें। किसी भी छात्र को भाषा की वजह से परेशानी नहीं होनी चाहिए।

डॉ. चौरसिया ने निदेशक महोदय को दिए गए सुझाव के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया तथा कार्यक्रम को समापन की ओर ले जाते हुए श्रीमती इन्द्रमणि को आमंत्रित किया। श्रीमती इन्द्रमणि ने सभी प्रतिभागियों को उत्साह के साथ भाग लेने के लिए धन्यवाद दिया तथा हिंदी समारोह को सफलतापूर्वक संपन्न कराने के लिए उपस्थित संस्थान निदेशक, उपनिदेशक (नीति एवं योजना), कुलसचिव, अध्यक्ष (हिंदी कक्ष), निर्णायक मंडल के सदस्यों, हिंदी कक्ष के सभी स्टाफ सदस्यों को बहुत–बहुत धन्यवाद एवं बधाई दी। अंत में डॉ. चौरसिया ने सभी से अपना मूल पत्राचार व अन्य प्रशासनिक कार्य अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी में करने की अपील की, ताकि मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। उन्होंने सभी के सहयोग के लिए धन्यवाद किया और खुशनुमा माहौल में हिन्दी समारोह संपन्न हुआ।

–श्रीमती इन्द्रमणि

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 1772, 7144, 1242

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com